पशुओं में रक्त परजीवी से होने वाले रोग

भारत जैसे कृषि प्रधान गर्म जलवायु वाले देश में, जहाँ विश्व की अधिकतम पशुओं की संख्या पायी जाती है, ऐसा अनुमान है कि पिछले कुछ दशकों में मौसम में बदलाव विशेषतः गर्मी एवं नमी में बदलाव के कारण संधिपाद जनित एवं किलनीयों आदि से फैलाने वाले रोगों पर विशेष प्रभाव देखा गया है। पशुचिकित्सा में महत्वपूर्ण रक्त परजीवी रोग ट्रिपैनोसोमोसिस, एलेरियोसिस, बेबियोसिस, और एनाप्लास्मोसिस हैं, जो क्रमशः ट्रिपैनोसोमा, थिलेरिया, बेबेसिया और एनाप्लाज्मा के कारण पशुधन की कई प्रजातियों में होते हैं। इनका संक्रमण मुख्य रूप से आथ्रोपोड वैक्टर के माध्यम से होता है। इनके कारण होने वाली बीमारियों का पालतू पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता पर होने वाला प्रभाव बहुत बड़ा है, इनके द्वारा होने वाले आर्थिक नुकसान का आकलन अभी तक भारत जैसे देशों में उपलब्ध नहीं है।

थिलेरिओसिस

- यह रोग सूक्ष्म रक्त परजीवी थिलेरिया एनुलेटा से होता है जो कि एक विशेष प्रकार की किलनी मुख्यतः हायलोमा एनाटोलिकम के काटने से विदेशी एवं संकर नस्ल के गोवंशीय पशुओं में होता है।
- यह परजीवी लाल एवम एक विशेष प्रकार की श्वेत रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है।
- जब किलनिर्या किसी रोग ग्रस्त जानवर का खून चूसती हैं तो परजीवी किलनी के शरीर में आ जाते हैं जहां इनकी संख्या में वृद्धि होती है तथा जब यह किलनी फिर से किसी स्वस्थ पशु को रक्त चूसने के लिए काटती है तो उसकी लार से यह रक्त परजीवी उस जानवर के खून में आ जाते हैं और पशु रोग ग्रस्त हो जाता है। कम उम्र के पशु तथा लम्बी यात्रा के बाद थके पशुओं में इस रोग की सम्भावना अधिक रहती है।
- किलनी के काटने के एक सप्ताह में पशु में बिमारी के लक्षण जैसे कि तेज बुखार, आंखों में आंसू आना, आंखों की पुतली में सूजन व रक्तमयता, नाक से स्राव, तेज हृदय गति, प्रिस्कैपुलर लसा ग्रंथि में सूजन, रक्त अल्पता, दस्त तथा कब्ज व मूत्र का रंग पीला हो जाता है। इलाज के अभाव में 2–3 सप्ताह में ही 70 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है।
- इस रोग की जांच पशुपालन विभाग कि नैदानिक प्रयोगशालाओं तथा आईवीआरआई के रोग शोध निदान केन्द्र में कराई जा सकती है। रोग की रोकथाम एंव बचाव के लिए पशुशाला में साफ–सफाई तथा किलनीनाशक दवाओं तथा पशुओं में किलनीनाशक दवाओं का टीकाकरण करते रहना चाहिए। नये आये पशु को 40 दिन तक संगरोध में रखना चाहिए। भारतीय बाजार में इस समय केवल बूपारवाक्वोन (ब्यूटालैक्स) नामक दवा इस रोग के उपचार के लिए उपलब्ध है। उपचार एंव निदान पशु चिकित्सक द्वारा काराना उचित रहता है, क्योंकि गलत निदान और उपचार के कारण पशु के जीवन को खतरा रहता है।

बबेशिओसिस (लाल पेशाब रोग)

- इस रोग का संचार भी रोग ग्रस्त किलनी के किसी स्वस्थ पशु को काटने से होता है।

किलनी ग्रस्त गोवंशीय पशु

- कभी कभी संक्रमित पशु को लगाये गये टीके की सूई से भी यह रोग स्वस्थ पशु में फैल जाता है।
- यह रोग तीव्र व चिरकालिक दोनों रूप में हो सकता है।
- रोग की तीव्र अवस्था में पशु को तेज बुखार, पीलिया, रक्त अल्पता व धडकन तेज होती है।
- लगातार लाल रक्त कणों के नष्ट होने के कारण इनसे निकला हीमोग्लोबिन पेशाब में आ जाता है जिससे पेशाब का रंग लाल हो जाता है। इसलिए इसे लाल पेशाब का रोग भी कहते हैं।
- पशु की तिल्ली बढ जाती है व पशु चारा नहीं खाता है।
- तीव्र अवस्था मे उचित इलाज ना मिलने पर 90 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है।
- जबकि रोग की चिरकालिक अवस्था में पशु को हल्का बुखार व मूत्र का रंग गहरा पीला हो जाता है।
- इस रोग में पशु के स्वस्थ होने के बाद भी पशु के रक्त की कुछ कोशिकाओं में परजीवी बने रहते हैं।
- जब इन पशुओं में लगी किलनी किसी स्वस्थ पशु को काटती है तो वह पशु संक्रमित हो जाता है।
- इस रोग की जांच पशुपालन विभाग कि नैदानिक प्रयोगशालाओं तथा आईवीआरआई के रोग शोध निदान केन्द्र में करायी जा सकती है।
- रोग की रोकथाम एंव बचाव के लिए पशुशाला में साफ–सफाई, किलनीनाशक दवाओं का छिड़काव करते रहना चाहिए।
- नये आये पशु को 40 दिन तक संगरोध में रखना चाहिए।
- भारतीय बाजार में केवल बैरेनिल नामक दवा बबेशिया के उपचार के लिए उपलब्ध है।
- इसके अलावा पशु में होने वली रक्ताल्पता को अन्य स्वास्थ्यवर्धक दवाओं से सुधारा जा सकता है।
- उपचार एंव निदान पशु चिकित्सक द्वारा काराना उचित रहता है क्योंकि गलत निदान और उपचार के कारण पशु के जीवन को खतरा रहता है।

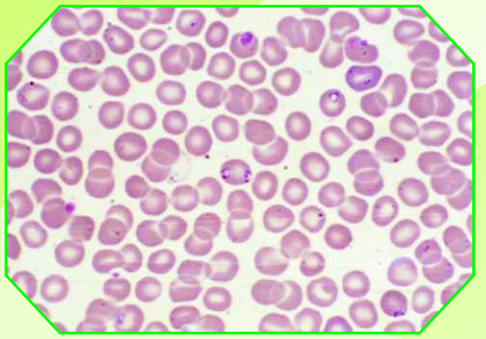

लाल रक्त कोशिकाओं में बबेशिया परजीवी

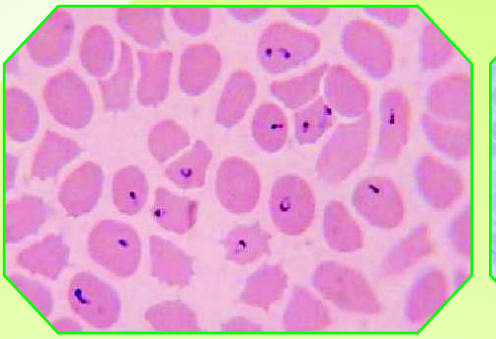

लाल रक्त कोशिकाओं में थिलेरिया परजीवी

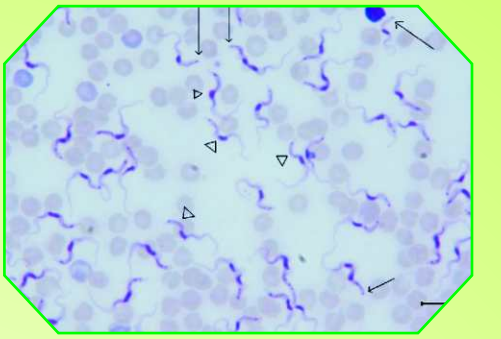

रक्त में ट्रिपैनोसोमा परजीवी

सर्रा रोग

- यह रोग टैबेनस डांस मक्खी के काटने से ट्रिपैनोसोमा इवांसाई नामक परजीवी द्वारा होती है।
- यह रोग आमतौर पर बरसात में या उसके बाद फैलता है क्योंकि इन्हीं दिनों इस रोग को फैलाने वाली मक्खियां अधिक संख्या में पायी जाती हैं।
- मक्खी संक्रमित पशु का रक्त चूसते समय संक्रमण को ग्रहण करके जब किसी स्वस्थ पशु को काटती है तो उस पशु को भी संक्रमित कर देती है।
- कभी कभी संक्रमित पशु को लगाये गये टीके की सुई से भी यह रोग स्वस्थ पशु में फैल जाता है।
- यह रोग घोडा, खच्चर, ऊंट, कुत्ता, भैंस व गोवंशीय पशुओं में पाया जाता है।
- रोग लगने के कुछ दिन बाद पशु को तेज बुखार आता है जो बाद में रुक–रुक कर आने लगता है।
- पशु कमजोर होता चला जाता है शरीर में खून की कमी हो जाती है जिससे पशु की सभी शलेष्मिक झिल्लियों में पीलापन आ जाता है।
- पशु के शरीर के निचले हिस्से जैसे कि पैर, धड़ व उदर में सूजन आ जाती है।
- पशु सुस्त हो जाता है तथा लड़खड़ा कर चलने लगता है तथा कभी कभी अपंग भी हो जाता है।
- यदि इलाज न किया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है। ऊटों में यह रोग चिरकालिक होता है कभी कभी 3 साल तक भी चलता है।
- पशु कमजोर व कृशकाय हो जाता है इसलिये इसे तिबरसा रोग भी कहते है।
- कुत्तों में यह रोग तीव्र व प्राणघातक होता है, 2–4 सप्ताह में ही कुत्ते की मृत्यु हो जाती है।

टैबेनस (डांस) मक्खी

- रोग की अतितीव्र अवस्था में पशु सर्रा के सामान्य लक्षण प्रकट नहीं करता।
- वह सिर पटकता है, चक्कर काटता है, उत्तेजित होकर फिर शांत हो जाता है और कुछ घंटों बाद ही पशु की मृत्यु हो जाती है।
- इस रोग की जांच पशुपालन विभाग कि नैदानिक प्रयोगशालाओं तथा आईवीआरआई के रोग शोध निदान केन्द्र में कराई जा सकती है।
- इस रोग के उपचार के लिए कुछ औषधियां जैसे कि ऐट्रीसाइड सल्फेट, ऐट्रीसाइड प्रोसाल्ट, सुरामिन, सुमोरिन तथा बैरेनिल भारत में उपलब्ध हैं।
- उपचार एंव निदान पशु चिकित्सक द्वारा कारना उचित रहता है क्योंकि गलत निदान और उपचार के कारण पशु के जीवन को खतरा रहता है।

लेखक :

डा0 अशोक कुमार तिवारी, विभागाध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक – कास्ट–– एसीएलएच परियोजना

डा0 (श्रीमती) रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा एवं प्रभारी एटिक

डा0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षिणक) एवं डीन, नोडल ऑफिसर

डा0 नवनीत कौर, कास्ट (एसीएलएच) परियोजना

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ

भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304